17. वाक्यों की सुगुम्फित संयोजना ऐसी होनी चाहिए कि पल्लवन एक पूर्ण विषय प्रतीत हो।
18. वाक्य-रचना और भाषा-प्रयोग के साथ-साथ विराम-चिह्न और वर्तनी पर भी विशिष्ट ध्यान देना चाहिए।
19. अप्रचलित शब्दों का प्रयोग न करें।
20. लिखने के बाद आद्यन्त उसे पढ़ें और देख लें कि कोई महत्वपूर्ण तथ्य छूट तो नहीं गया अथवा कोई ऐसी बात तो नहीं, जो मूल कथ्य का विरोध करती हो।
21. लिखने के बाद दोबारा पढ़कर परख लें कि पल्लवन का निष्कर्ष वही है, जिसका पल्लवन किया जाना था, कहीं अस्पष्टता दोष तो नहीं, यदि हो तो उसका निवारण अवश्य कर दें।
22. अन्ततः पल्लवन स्वतःपूर्ण और स्वतन्त्र रचना-रूप होना चाहिए।

7.5 पल्लवन के कतिपय उदाहरण

1. जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना

सुमति का अर्थ है—सद्बुद्धि। सुमति ही व्यक्ति को जीवन में सदाचरण के लिए प्रेरित करती है। सद्बुद्धि से ही व्यक्ति लोक-कल्याण एवं परोपकार की भावना की ओर प्रेरित होता है। सुमति की अखण्ड ज्योति से मानव-मन का अज्ञान समूल नष्ट हो जाता है। व्यक्ति के मन में जगहित-जनहित की भावना उत्पन्न होती है, मन स्वच्छ, निर्मल दर्पण के समान हो जाता है। निराशा और मानसिक अशान्ति, राग-द्वेष-क्रोध आदि का आवरण स्वयमेव छँट जाता है। सामान्य व्यक्ति किसी की समृद्धि को देखकर ईर्ष्यावश मानसिक कलुष से ग्रसित हो जाता है, इस विकृति से सुमति ही बचा सकती है। व्यक्ति में सुमति सत्संगति से आती है। जहाँ सुबुद्धि होती है, वहाँ ऋद्धि-सिद्धि स्वयं आ जाती है। झूठे आडम्बरों में न फँसकर जब व्यक्ति सद्बुद्धि रूपी धन-सम्पत्ति को पा लेता है तो जीवन की सभी सुख-सम्पत्तियाँ उसकी दासता स्वीकार कर लेती हैं। तभी तो तुलसीदास ने कहा है—

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना,
जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना।

2. वही मनुष्य है, जो मनुष्य के लिए मरे

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित यह पंक्ति मानव को उचित कर्तव्य करने की प्रेरणा देती है। जब मनुष्य अपने किसी कर्तव्य को पूर्ण तत्परता के साथ पूरा कर लेता है, तो उसे आत्मिक शान्ति मिलती है। उसका तो भला होता ही है,

Scanned by TapScanner

3. मूलभाव को समझ लेने पर इस बात पर विचार करें कि मूल कथ्य को विस्तार कैसे दिया जाए, कहाँ उसमें उदाहरण जोड़ें, जो कथ्य को अधिक पुष्ट कर सकें और कहाँ विरोधी तर्क को काटा जाए।
4. विषय से सम्बन्धित विचार को ही महत्व दें। विषय के समर्थन में अनावश्यक बातों पर ध्यान न दें।
5. विषय पर अपने मौलिक विचार प्रभावोत्पादक ढंग से अभिव्यक्त करें।
6. शीर्षक को विस्तार देने के लिए क्या कहना है, अर्थ को कैसे स्पष्ट करना है, उदाहरण को कैसे मूल-भाव से जोड़ना है, पक्ष-विपक्ष में क्या तर्क देना है, इन बातों को लिखने से पूर्व ही निश्चित कर लेना चाहिए।
7. पल्लवन में मूल कथ्य का ही विस्तार होता है, इसलिए उससे सम्बन्धित सभी आयामों को गहराई से स्पर्श करना चाहिए।
8. मूल कथ्य के साथ कोई दूसरा ऐसा कथ्य नहीं आना चाहिए, जो शीर्षक से अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत हो और जिसके सम्मुख मूल कथ्य नगण्य हो जाए।
9. पल्लवन का आकार लघु होता है, इसलिए अनावश्यक एवं अवांछित उदाहरणों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
10. जिन उदाहरणों का प्रयोग किया जाए, वे मूल कथ्य के विरोधी भाव को प्रकट करनेवाले न हों।
11. यदि पल्लवन की आकार-सीमा शब्दों या पंक्तियों में निश्चित हो, तो उसी के आधार पर विषय का विस्तार करना चाहिए, अन्यथा उसका आकार बड़ा हो जाएगा। ध्यान से परख लें कि कहीं कोई अनावश्यक शब्द या वाक्य तो नहीं, यदि हो तो उसे काट दें।
12. पल्लवन का शीर्षक ही उसका मूल कथन है, उसी की प्रत्येक वाक्य द्वारा पुष्टि करनी चाहिए।
13. पल्लवन-रचना में तर्कों और विचारों का ऐसा सुविचारित पूर्वापर क्रम हो कि वाक्य एक-दूसरे से जुड़ते चले जाएँ और विषय को विकास के चरमोत्कर्ष तक ले जा सकें।
14. पल्लवन में दो मुख्य वाक्य होते हैं। पहला वाक्य तो शीर्षक होता है और दूसरा अन्तिम वाक्य होता है, जो पहले वाक्य को पुष्ट करता है।
15. पल्लवन की वाक्य रचना में पुनरुक्ति दोष नहीं होना चाहिए।
16. पल्लवन की भाषा गत्यात्मक होनी चाहिए। पढ़ते समय पाठक को लगे कि वह तीव्र-गति से आगे बढ़ रहा है, जिस प्रकार नदी की एक लहर के बाद दूसरी-तीसरी लहर स्वयमेव आती रहती है, इसी प्रकार वाक्यों के क्रम में तारतम्य होना अनिवार्य है।

पल्लवन और संक्षेपण में तो पर्याप्त अन्तर है ही। वे दोनों एक-दूसरे के सर्वथा विरोधी अर्थों के सूचक हैं। संक्षेपण में व्यक्त विचारों को इस प्रकार संक्षिप्त करना होता है कि गौण एवं अनावश्यक बातें निकल जाएँ और मूल वक्तव्य को आँच न पहुँचे, वहाँ पल्लवन में व्यक्त विचार के स्पष्टीकरण के समय उस विषय को विस्तार प्रदान किया जाता है। इस प्रकार पल्लवन का मूल रूप से बड़ा होना अनिवार्य है।

पल्लवन को निबन्ध भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि पल्लवन और निबन्ध में मुख्य तो आकार का ही अन्तर है। पल्लवन के विषय पर निबन्ध भी लिखा जा सकता है, परन्तु पल्लवन में एक बड़े पैराग्राफ में मूल विषय के कथ्य को स्पष्ट कर दिया जाता है, वहाँ निबन्ध में उसी विषय को सुविचारित पूर्वापर क्रम में दीर्घ रूप दिया जाता है। पल्लवन की आकार-सीमा दस से बीस पंक्तियों तक निश्चित होती है।

इस प्रकार पल्लवन किसी गद्य या पद्य रचना का अंश या लघु-रूप नहीं होता। उसका अस्तित्व स्वतन्त्र है। पल्लवन किसी अनुभव, कहावत, काव्य-पंक्ति, वाक्य, लोकोक्ति से सम्बन्धित विषयों पर लिखा जा सकता है। जैसे–

घर का भेदी लंका ढाए। (अनुभव)

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।
भाल लिखी लिपि को टाल सके न कोय। (कहावत)

मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दुस्तान हमारा। (काव्यपंक्ति)

धीरज धर्म मित्र अरु नारी,
आपत काल परखिये चारी।
बुरा जो देखन मैं चला बुरा न दीखा कोय। (लोकोक्ति)

वैर क्रोध का आचार या मुरब्बा है
विपत्ति मित्रता की कसौटी है। (प्रसिद्ध पंक्ति)

7.4 पल्लवन लेखन के लिए ध्यातव्य तथ्य

पल्लवन लिखने से पूर्व और पल्लवन लिखते समय कुछ आवश्यक बातें विचारणीय हैं–

1. सबसे पहले दिए गए शीर्षक को तब तक पढ़ते रहना चाहिए, जब तक उसका अर्थ भली-भाँति समझ न आ जाए।
2. विषय के भाव एवं उसके अर्थ को समझकर लिखने से पूर्व उस पर सोच-विचार करें कि उसे शुरू कैसे किया जाए। शीर्षक के मूलभाव को ही पहले लेना चाहिए।

Scanned by TapScanner

विकास होता है। वे स्वतन्त्र रूप से अपने विचार सरल, स्पष्ट, तारतम्यपूर्ण एवं प्रभावोत्पादक ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं। पल्लवन का अभ्यास पत्रकारिता एवं सम्पादन के क्षेत्र में भी विशेष महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। पत्रकार किसी विषय को देखकर या सुनकर उस विषय पर मर्मस्पर्शी लेख लिख सकता है। विद्यार्थी जब किसी प्रसिद्ध साहित्यकार का लेख एवं रचना पढ़ते हैं, तो वे उस विषय में से पल्लवन का विषय चुनकर अपने स्वतन्त्र मत को प्रकट कर सकते हैं, इससे उनमें आत्मविश्वास तो उत्पन्न होता ही है, साथ ही लेखनी एवं भाषा पर भी अधिकार हो जाता है। उनमें शब्द-चयन की प्रतिभा जागृत होती है और वाक्य-रचना पर पकड़ मजबूत हो जाती है। पल्लवन के निरन्तर अभ्यास से पाठक एवं लेखक में चमत्कारपूर्ण बुद्धि का विकास होता है। लघु रूप होने के कारण यह विधा आजकल लोकप्रिय हो रही है, क्योंकि लेखक इसमें विषयानुसार अपने मन्तव्य को संक्षेप में अभिव्यक्त कर देता है।

7.3 पल्लवन एवं अन्य रचनारूप

प्रायः ऐसा देखा जाता है कि विद्यार्थी भ्रमवश पल्लवन, अनुच्छेद-लेखन, संक्षेपण, व्याख्या अथवा निबन्ध-लेखन आदि विभिन्न रचना-रूपों में अन्तर नहीं कर पाते। इसलिए इन रचना-रूपों के पारस्परिक भेद से परिचित होना आवश्यक हो जाता है।

पल्लवन और अनुच्छेद-लेखन में भाषा-प्रयोग की दृष्टि से भेद प्रतीत होता है, क्योंकि पल्लवन सदैव किसी प्रसिद्ध लेखक की पंक्ति या लोकोक्ति, मुहावरा अथवा सुभाषित से सम्बन्धित विषय पर लिखा जाता है। इसमें अहम् अथवा मैं शैली का प्रयोग नहीं किया जाता, जबकि अनुच्छेद किसी भी रचना अथवा कृति का एक भाग होता है, जिसमें मुख्य विषय को पुष्ट करने के लिए तथ्य प्रस्तुत किए जाते हैं, इसमें मैं या आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग भी किया जा सकता है। अनुच्छेद में किसी भी काल का प्रयोग किया जाता है, जबकि पल्लवन में केवल वर्तमान काल का प्रयोग किया जाता है। स्थूल रूप में पल्लवन और अनुच्छेद-लेखन लघु-आकार के कारण समान दिखाई देते हैं, परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से इनमें पर्याप्त अन्तर दिखाई देता है।

पल्लवन का अर्थ व्याख्या भी नहीं होता। व्याख्या किसी भी गद्यांश या पद्यांश की होती है। व्याख्या में पूर्व पद और उत्तरपद से सम्बद्ध विचारों की पुष्टि की जाती है; साथ ही अन्य सम्बन्धित विचार का विस्तार किया जाता है। व्याख्या में लेखक गद्यांश या पद्यांश को ही अपनी विचारभूमि बनाता है, परन्तु पल्लवन में लेखक अपने विचार प्रकट करने में स्वतन्त्र होता है। व्याख्या में विस्तार का आग्रह अधिक होता है, जबकि पल्लवन में भाव-प्रकट करने के लिए संक्षिप्तता आवश्यक है।

Scanned by TapScanner

7. पल्लवन

7.1 पल्लवन : अर्थ और परिभाषा

पल्लवन का शाब्दिक अर्थ है—विस्तार, फैलाव। हिन्दी में पल्लवन अंग्रेजी के Expansion का पर्याय है।

पल्लवन एक ऐसी लघु रचना को कहा जाता है, जिसमें किसी सूत्र, काव्य-पंक्ति, कहावत अथवा लोकोक्ति के मुख्य भाव को विस्तार रूप दिया जाता है कि वह मूल भाव संक्षिप्त होते हुए भी पूरी तरह स्पष्ट हो जाए। उसे स्पष्ट करने के लिए उदाहरणों का आश्रय लिया जाता है और उसके विपक्ष में तर्कों को काटकर मूल कथ्य को विस्तार दिया जाता है।

अतः पल्लवन वाक्यों के उस समूह को कहते हैं, जिसमें किसी एक विषय के मुख्य विचार या सिद्धान्त को तर्क एवं उदाहरण द्वारा विस्तृत रूप दिया जाता है और विपक्ष के द्वारा उठाए जाने योग्य तर्कों को काटते हुए मूल कथ्य को पूरी तरह स्पष्ट किया जाता है।

7.2 पल्लवन का महत्त्व एवं उपयोगिता

आधुनिक वैज्ञानिक युग में पल्लवन का अपना ही महत्त्व है। प्राचीनकाल से यह परम्परा अनादि स्रोत के समान प्रवाहित होती आ रही है। वेदों की रचना सूत्र-ग्रन्थों के रूप में हुई तो उनको समझाने के लिए संहिता ग्रन्थ लिखे गए। संस्कृत साहित्य तो सूक्तियों एवं सुभाषितों का विशाल भण्डार है। विश्व की प्रत्येक प्रचलित एवं जीवित भाषा में सूक्तियाँ, मुहावरे अवश्य रहते हैं, उनके मूल भाव को जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए पल्लवन की आवश्यकता पड़ती है, जिसमें तर्क द्वारा कथ्य की पुष्टि की जाती है।

आधुनिक भौतिकवादी युग में प्रत्येक वस्तु की उपयोगिता उसकी उपादेयता के आधार पर की जाती है। पल्लवन के अभ्यास से विद्यार्थियों को पर्याप्त लाभ होता है। वे किसी भी विषय पर निर्भय होकर लिखने के अभ्यस्त हो जाते हैं, उनमें किसी भी काव्यांश अथवा वाक्य के वृद्धीकरण एवं विस्तरण की निर्णयात्मक बुद्धि का

Scanned by TapScanner